वैदिककालीन समाज एवं गुप्तकालीन समाज

(1) वैदिककालीन समाज तात्कालीन भौतिक परिस्थिति से प्रभावित था। इस कारणवश किसी भी प्रकार के सामाजिक संगठन का विकास नहीं हो पाया था। इसके विपरित गुप्तकालीन समाज पूरी तरह से व्यवस्थित एवं सांगठनिक समाज में परिणत हो चुका था।

(2) वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था को सांकेतिक प्रारूप प्रदान किया गया। इसके विपरित गुप्तकाल में वर्ण- व्यवस्था एक सामाजिक आवश्यकता के रूप में अधिरोपित हो गया।

(3) किसी भी वैदिककालीन साहित्य से पाँचवी जाति अर्थात् अत्यंज जातियों के संबंध में कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है इसके विपरित गुप्तकालीन साहित्य से अर्थात् पाँचवी जाति अर्थात् अत्यंज का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होता है।

(4) वैदिककालीन समाज में अस्पृश्यता से संबंधित कोई भी प्रमाण नहीं प्राप्त होता है। इसके विपरित गुप्तकालीन समाज में अस्पृश्यता की अवधारणा समाज की महत्वपूर्ण अंग बन गई।

(5) वैदिककालीन साहित्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को द्विज के अंदर रखा गया था। इसके विपरित गुप्तकाल में केवल ब्राह्मण को द्विज की श्रेणी में रखा गया था।

(6) शूद्रों की स्थिति के संबंध में वैदिककाल एवं गुप्तकाल के बीच महत्वपूर्ण अंतर था क्योंकि वैदिककालीन शूद्रों के सुधार से

संबंधित कोई प्रमाण नहीं मिलता है परंतु गुप्तकाल में शूद्रों को न केवल कृषि का अधिकार दिया अपितु वेद सुनने तथा रामायण, महाभारत सुनने का अधिकार दिया गया। यदि ह्वेनसांग के विवरण को आधार माना जाए तो यह स्पष्ट होता है कि गुप्तकाल के शूद्रों को राजनीतिक अधिकार भी प्राप्त होने लगे थे। चीनी में कहता है कि मतिपुर का राजा शूद्र था।

(7) वैदिककालीन साहित्य के अनुशीलन से स्त्रियों पर पूर्ण प्रतिबंध से संबंधित कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होता है परंतु गुप्तकालीन साहित्य अभिलेख तथा शास्त्रों के आधार पर स्त्रियों पर प्रतिबंध से संबंधित अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं। इतना ही नहीं यह भी सर्वविदित है कि बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा सामाजिक आवश्यकता के रूप में पहली बार गुप्तकाल में ही सामने आया। इतना ही नहीं गुप्तकाल में ही पूरी तरह से विधवा पुनर्विवाह तथा नियोग को प्रतिबंधित कर दिया गया।

(8) वैदिक काल में बाल-विवाह का प्रचलन नहीं था तथा कन्या के विवाह की आयु 16 निर्धारित की गई थी। इसके विपरीत यदि पराशर स्मृति को माना जाए तो गुप्तकाल में कन्या के विवाह की आयु मात्र 8 वर्ष थी।

(9) अथर्ववेद के सांकेतिक प्रमाण के अतिरिक्त और कोई भी ऐसा प्रमाण नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल में सती प्रथा विद्यमान थी परंतु

Scanned with CamScanner